गोलगप्पे
पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-887-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्लू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्लू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी : *गौतम गांगुली*

गोलगप्पे
मदन
जमाल

एक दिन मम्मी ने जमाल को पाँच रुपये दिए।
जमाल ने सब्ज़ी धोने में मम्मी की मदद की थी।
मम्मी जमाल से बहुत खुश थीं।

वह मदन को लेकर बाज़ार गया।
बाज़ार में गोलगप्पे की एक दुकान थी।
दोनों हमेशा वहीं गोलगप्पे खाते थे।
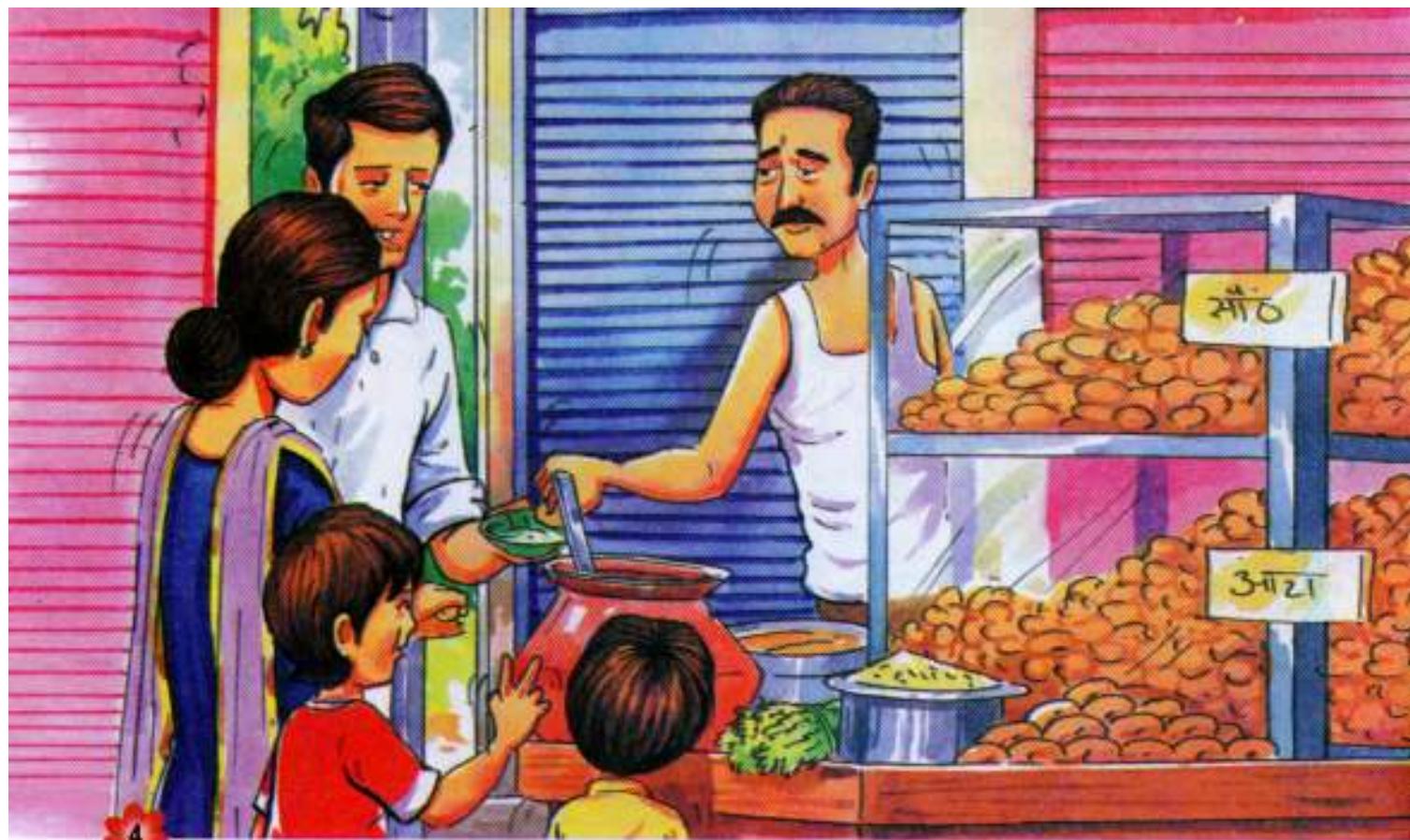
गोलगप्पे की दुकान पर मदन ने दो दोने माँगे।
गोलगप्पे वाला दूसरे लोगों को खिला रहा था।
जमाल खाते हुए लोगों को देखने लगा।
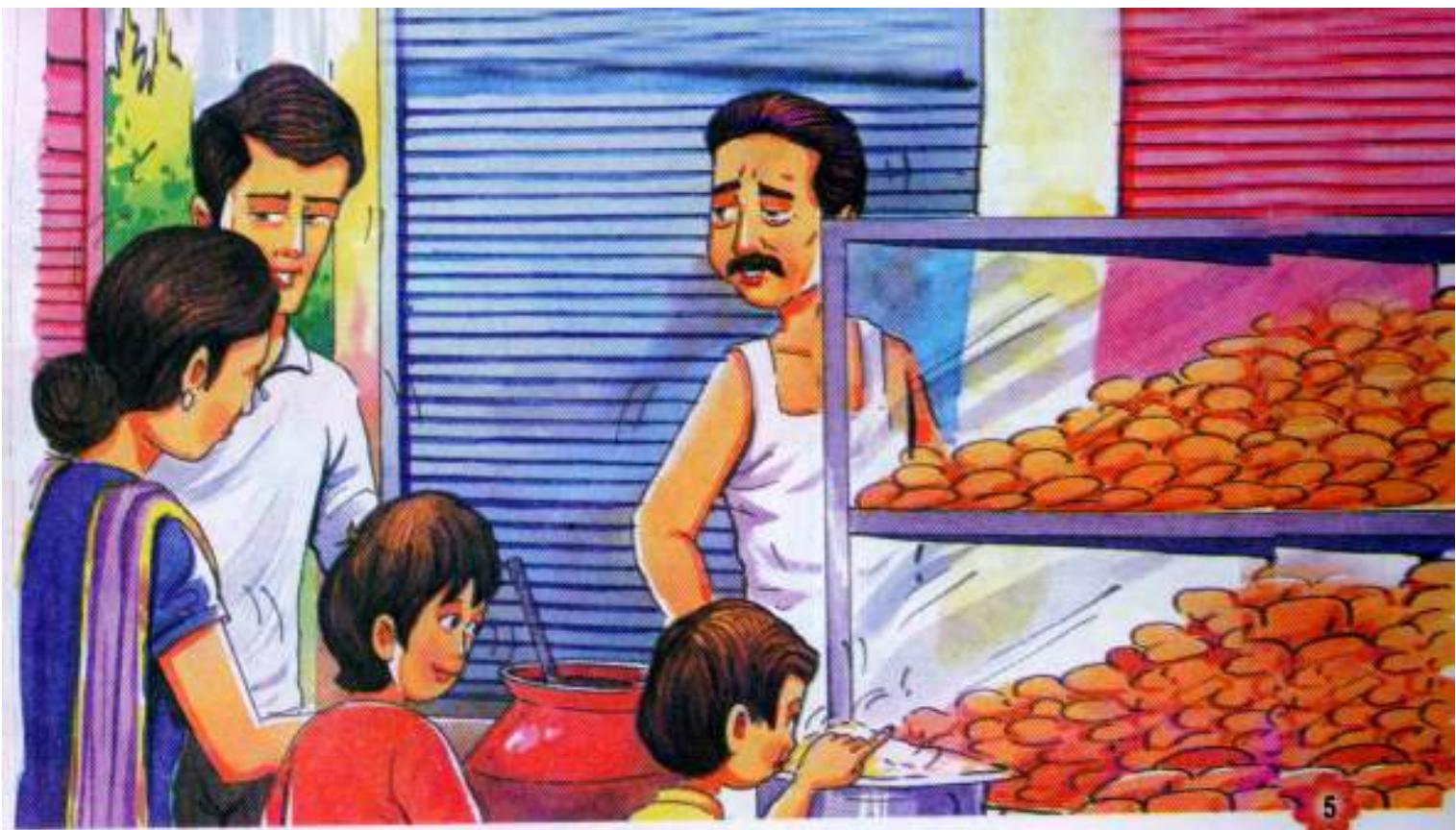
जमाल का मन गोलगप्पे खाने के लिए मचल रहा था।
उसे सौंठ चाटने का मन कर रहा था।
जमाल के मुँह में पानी आ रहा था।
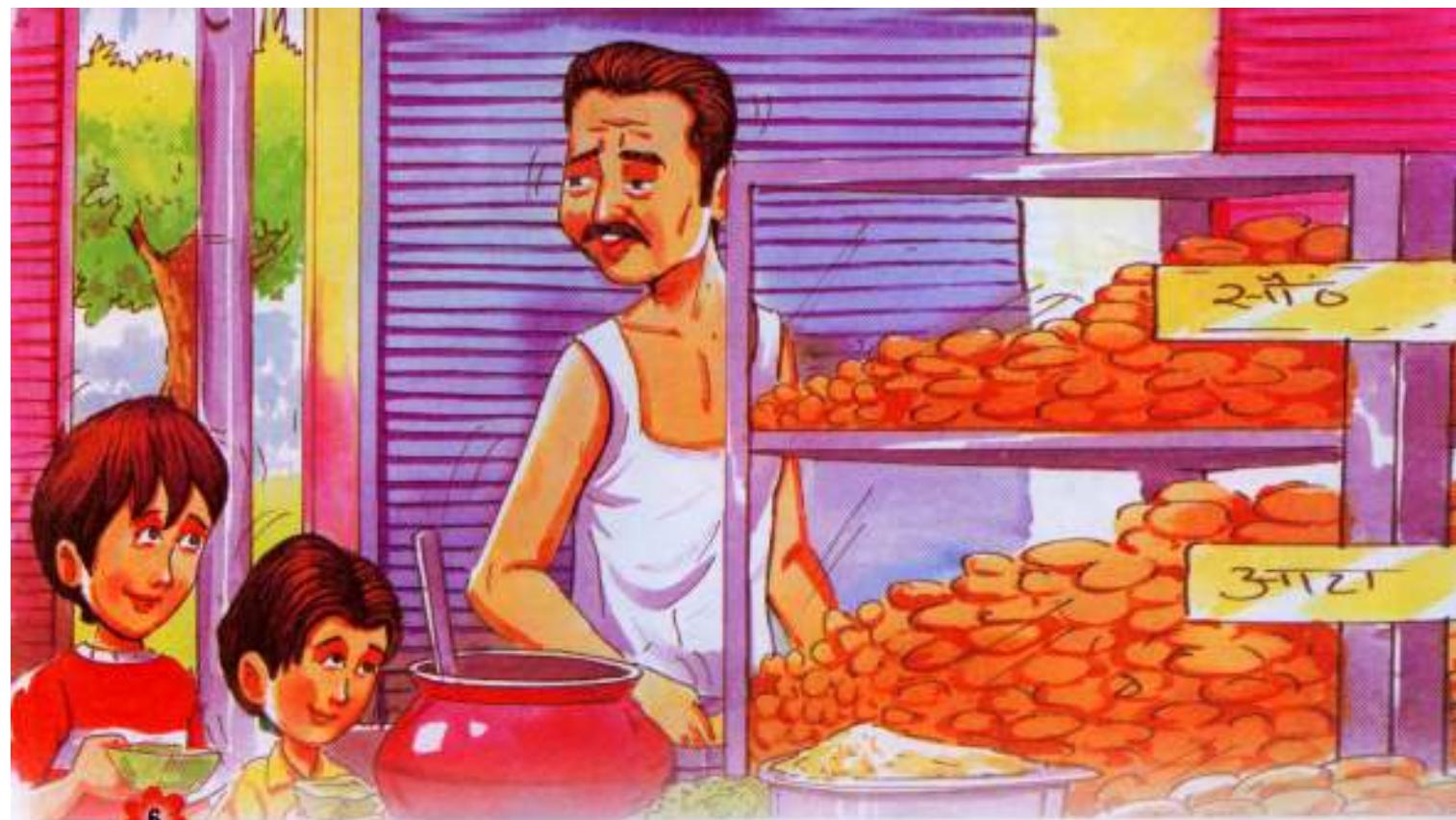
गोलगप्पे वाले ने उनको एक-एक दोना दिया।
जमाल ने सौंठ वाले गोलगप्पे माँगे।
मदन ने कहा कि उसे सौंठ नहीं चाहिए।
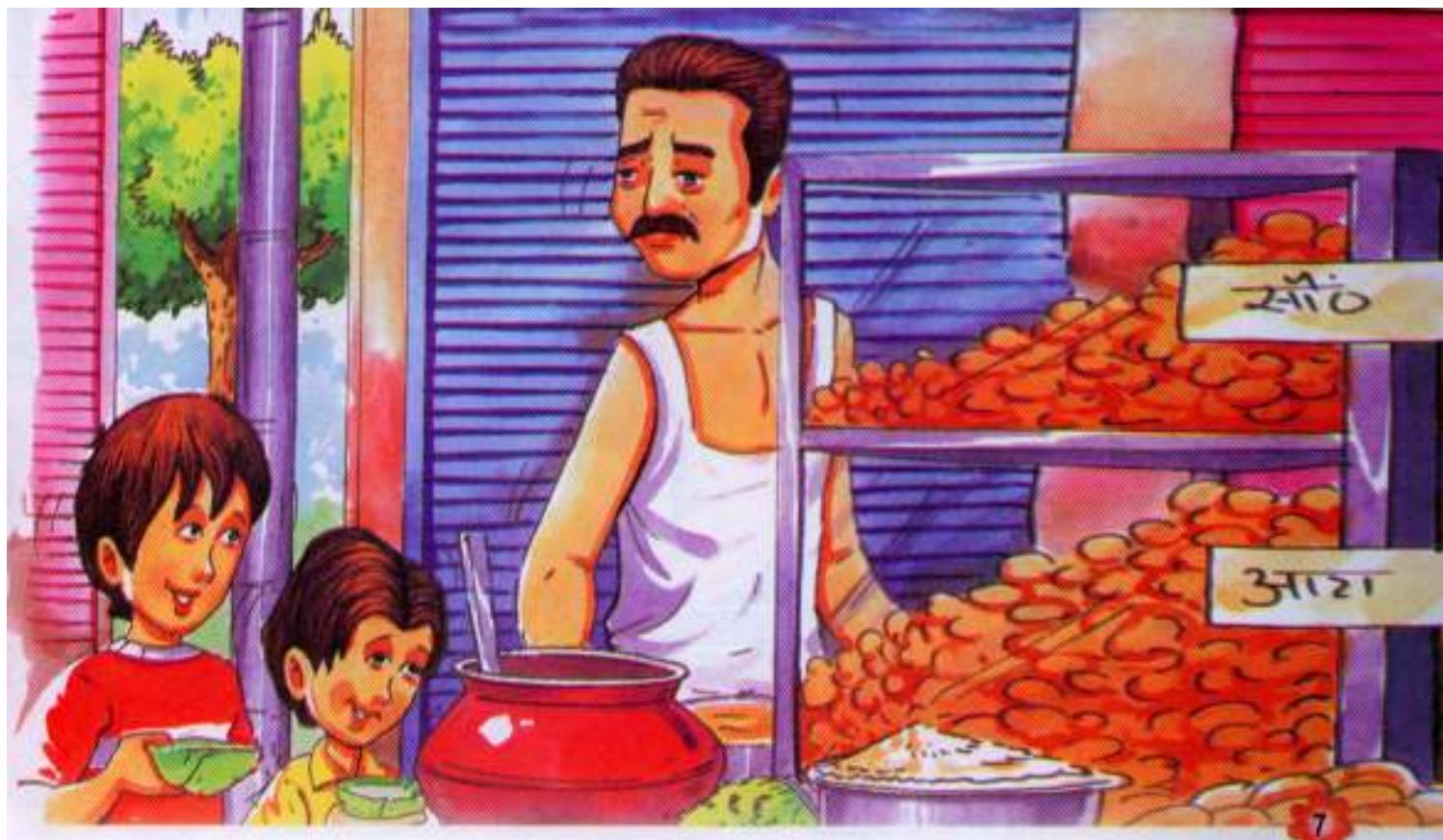
गोलगप्पे बहुत बड़े-बड़े थे।
जमाल ने गोलगप्पा खाने के लिए बहुत बड़ा मुँह खोला।
उसका पूरा मुँह गोलगप्पे और पानी से भर गया।
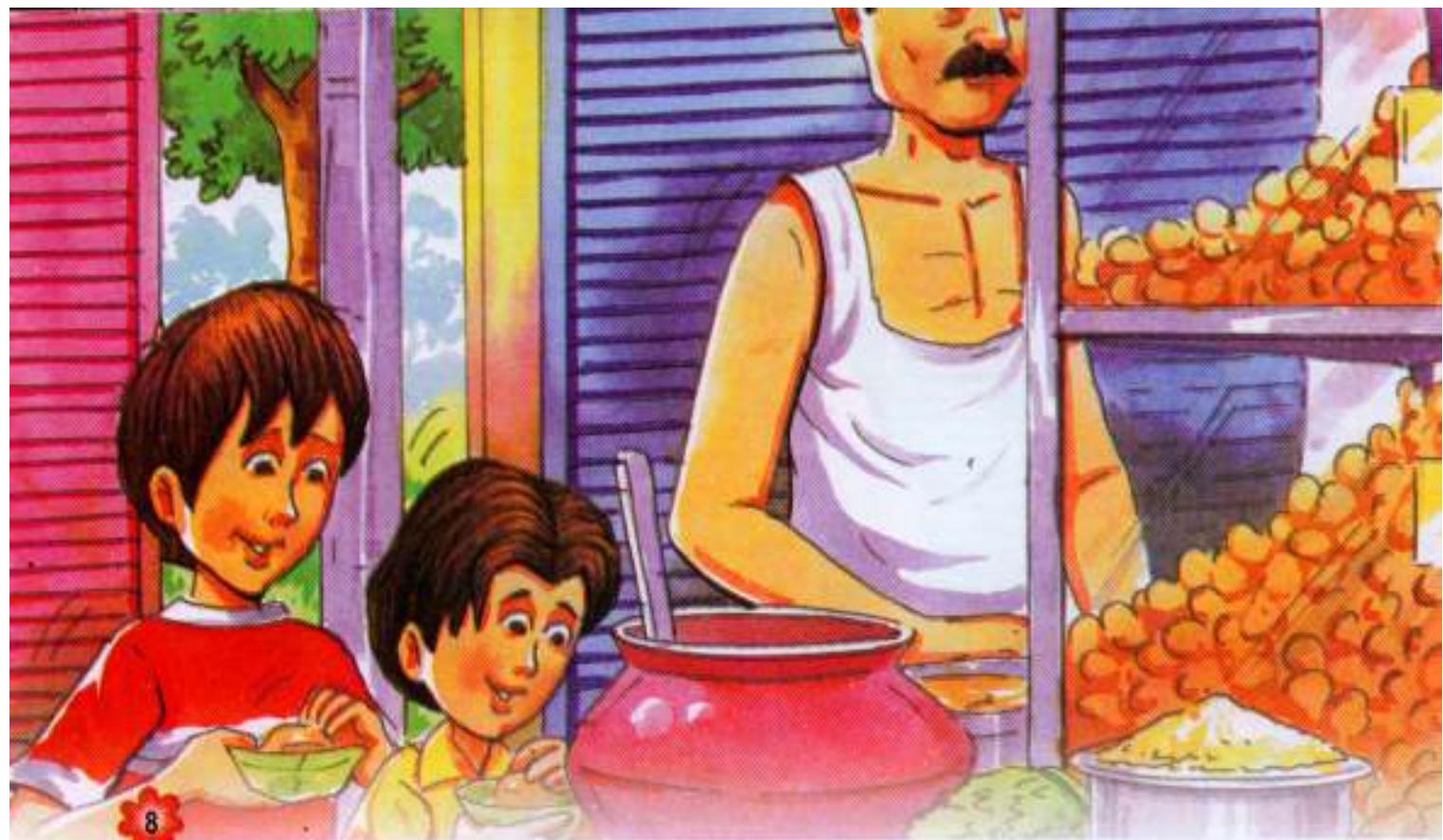
कुरकुरे गोलगप्पे से जमाल के मुँह में आवाज़ हुई।
उसके बाद मुँह में खट्टा-मीठा पानी घुल गया।
जमाल ने ज़ोर से चटखारा लिया।
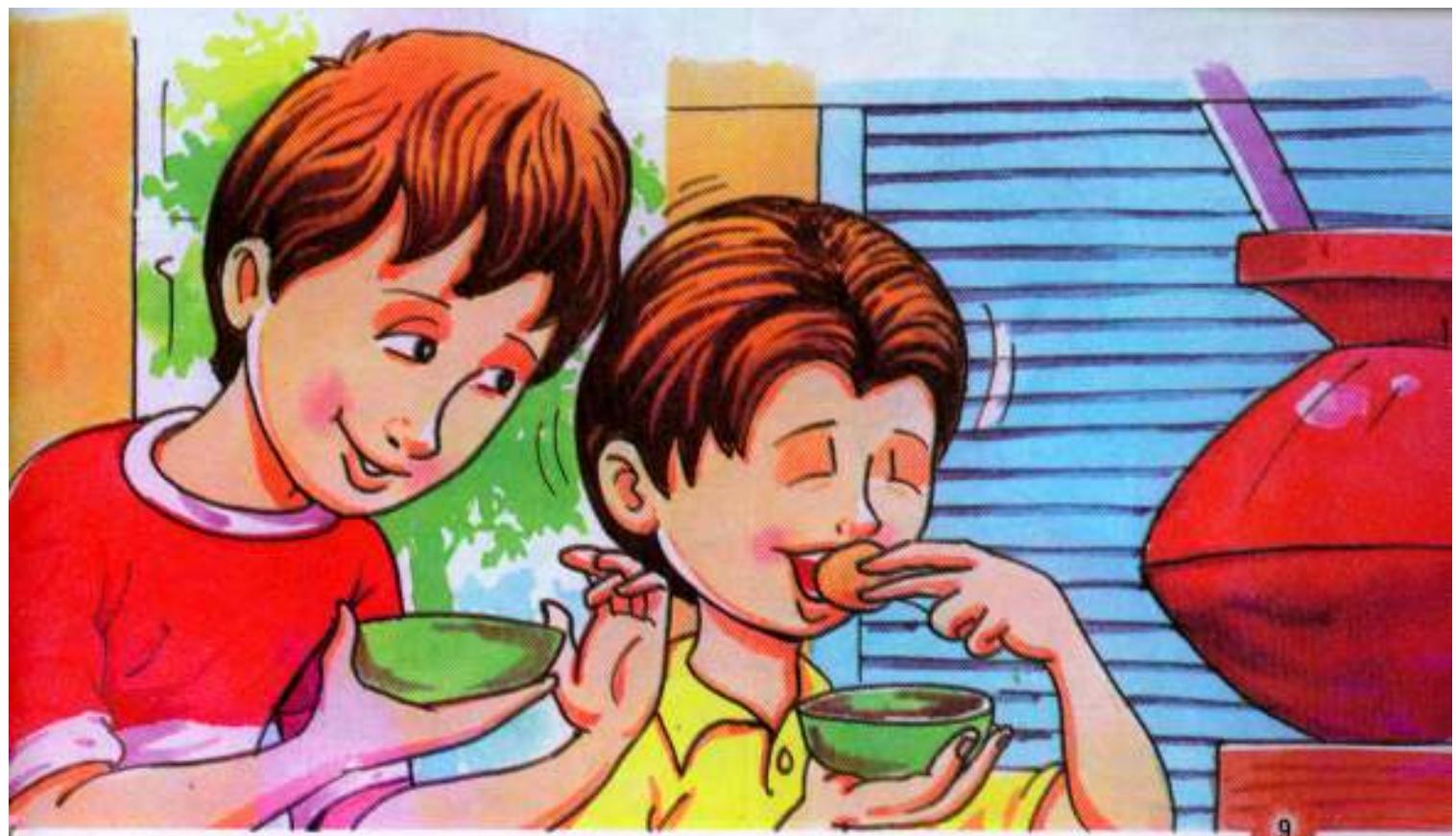
गोलगप्पा मुँह में डालते ही उसकी आँखें बंद हो जाती थीं।
जमाल पानी का स्वाद लेने लगता था।
उसे खट्टा, मीठा, तीखा मिला-जुला पानी पसंद था।

मदन को खट्टा-खट्टा पानी बहुत अच्छा लग रहा था।
उसे पानी के तीखेपन में मज़ा आ रहा था।
गोलगप्पा खाते ही उसकी आँखें भी बंद होती थीं।
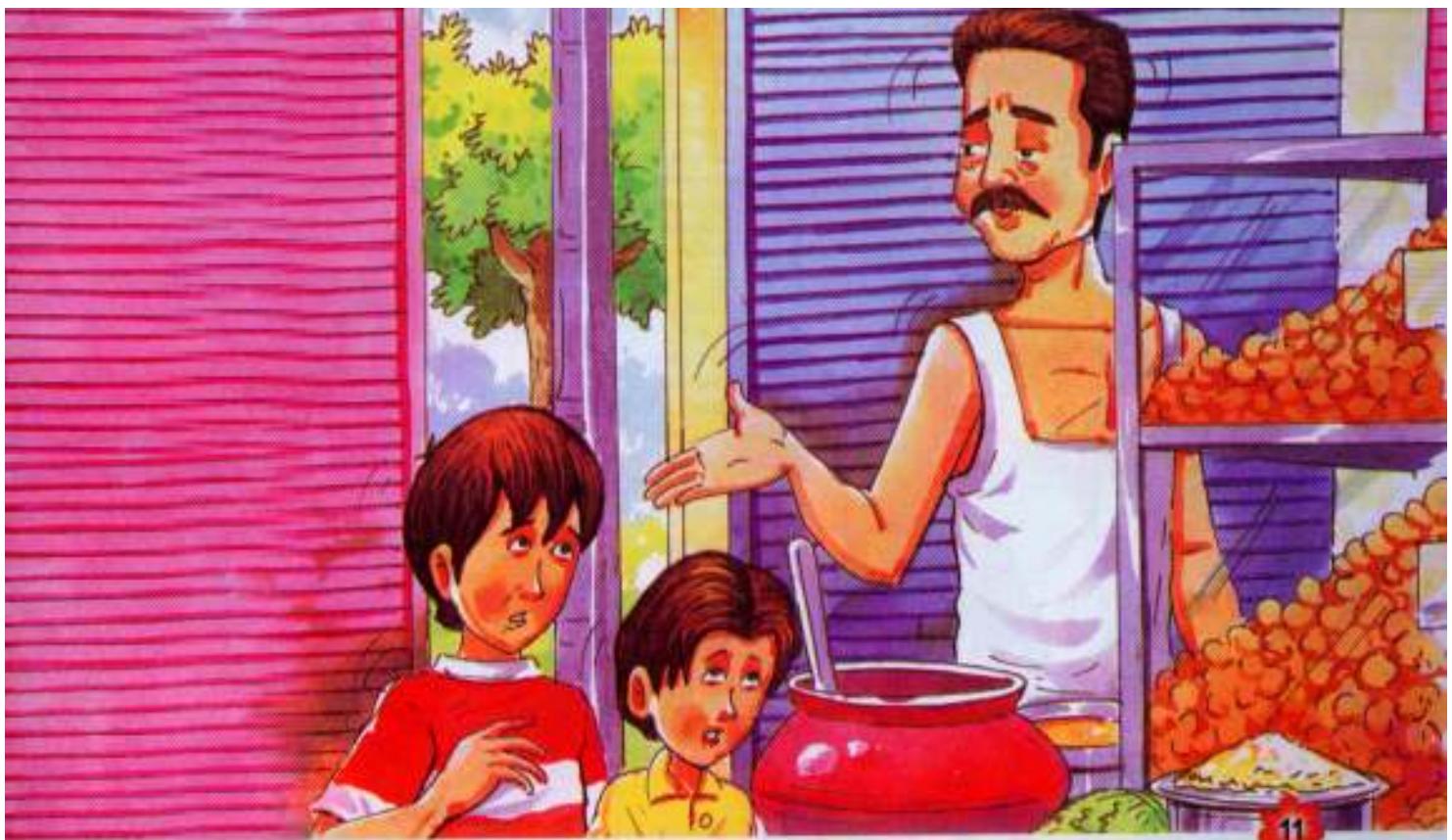
पाँच गोलगप्पे खाने के बाद जमाल थोड़ा रुका।
वह पैसों के बारे में सोचने लगा।
उसके पास सिर्फ़ पाँच रुपये थे।
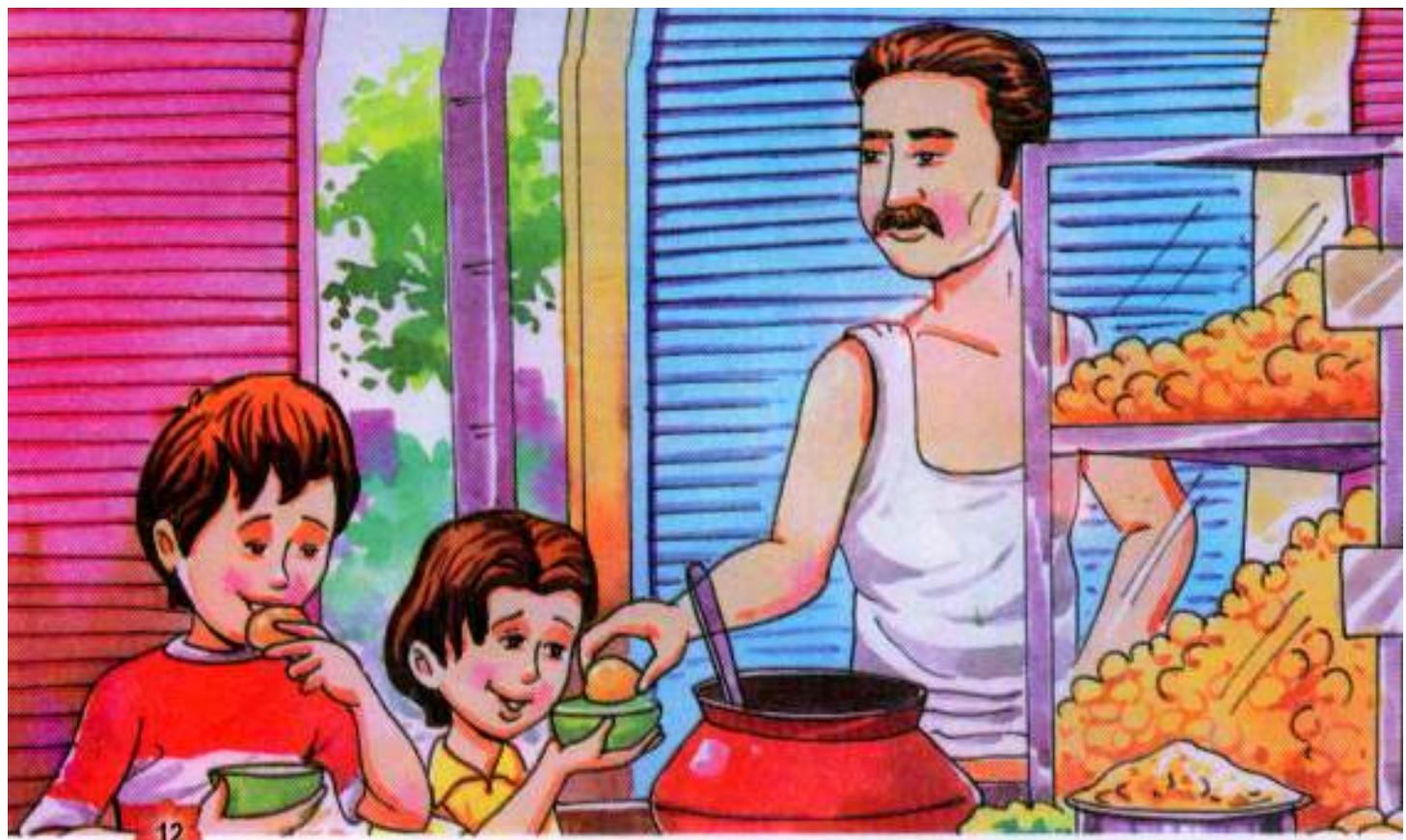
इतने में गोलगप्पे वाले ने एक और गोलगप्पा बढ़ाया।
जमाल से मना नहीं किया गया।
वह फिर गोलगप्पे खाने लगा।
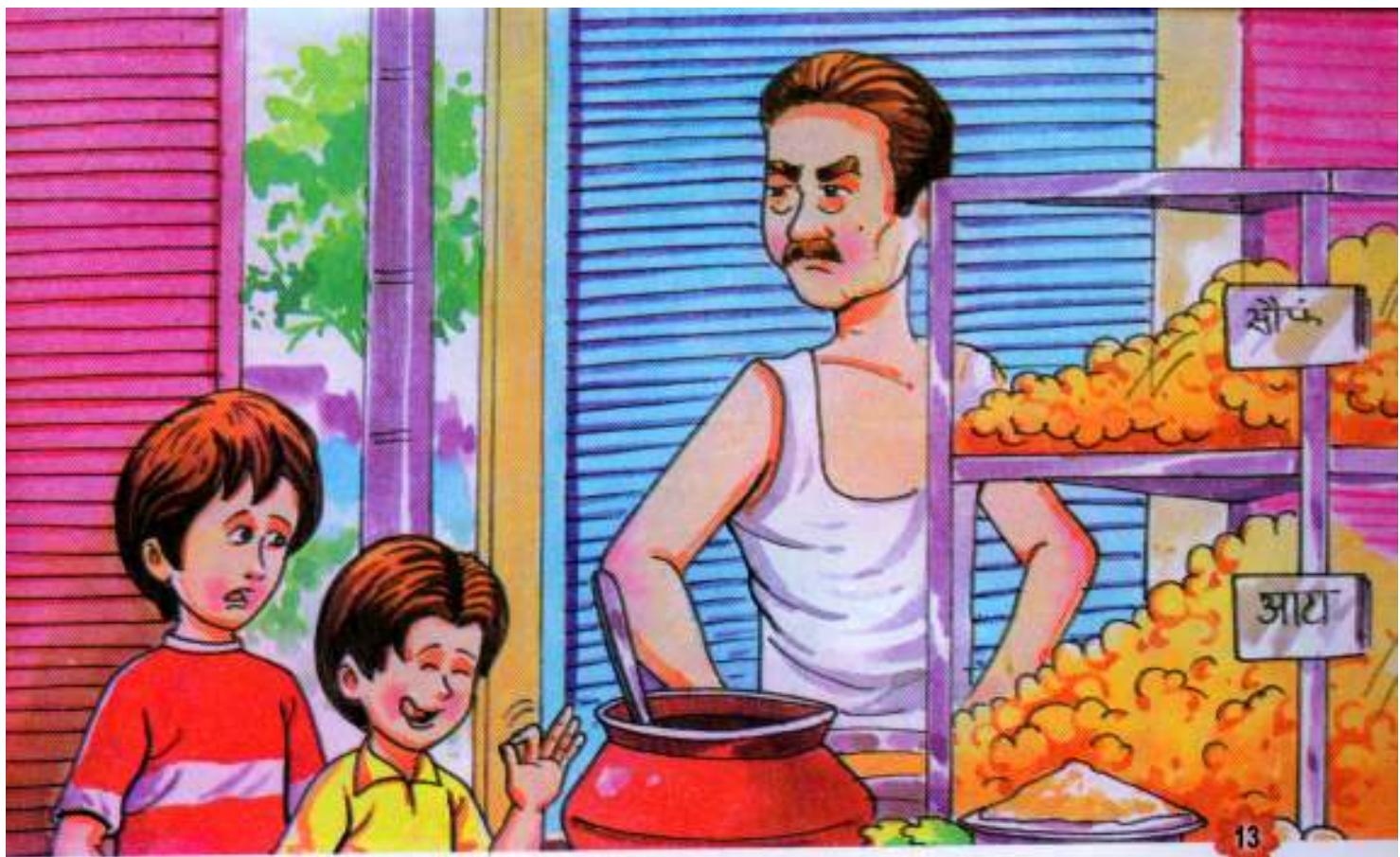
मदन ने जमाल की तरफ़ देखा।
उसने आँखों से पैसे के बारे में इशारा किया।
जमाल चटखारे लेने में लगा हुआ था।

14

मदन से भी रुका नहीं गया।
वह भी गोलगप्पे खाता गया।
उसने गोलगप्पे वाले से पानी में खट्टा बढ़ाने को कहा।
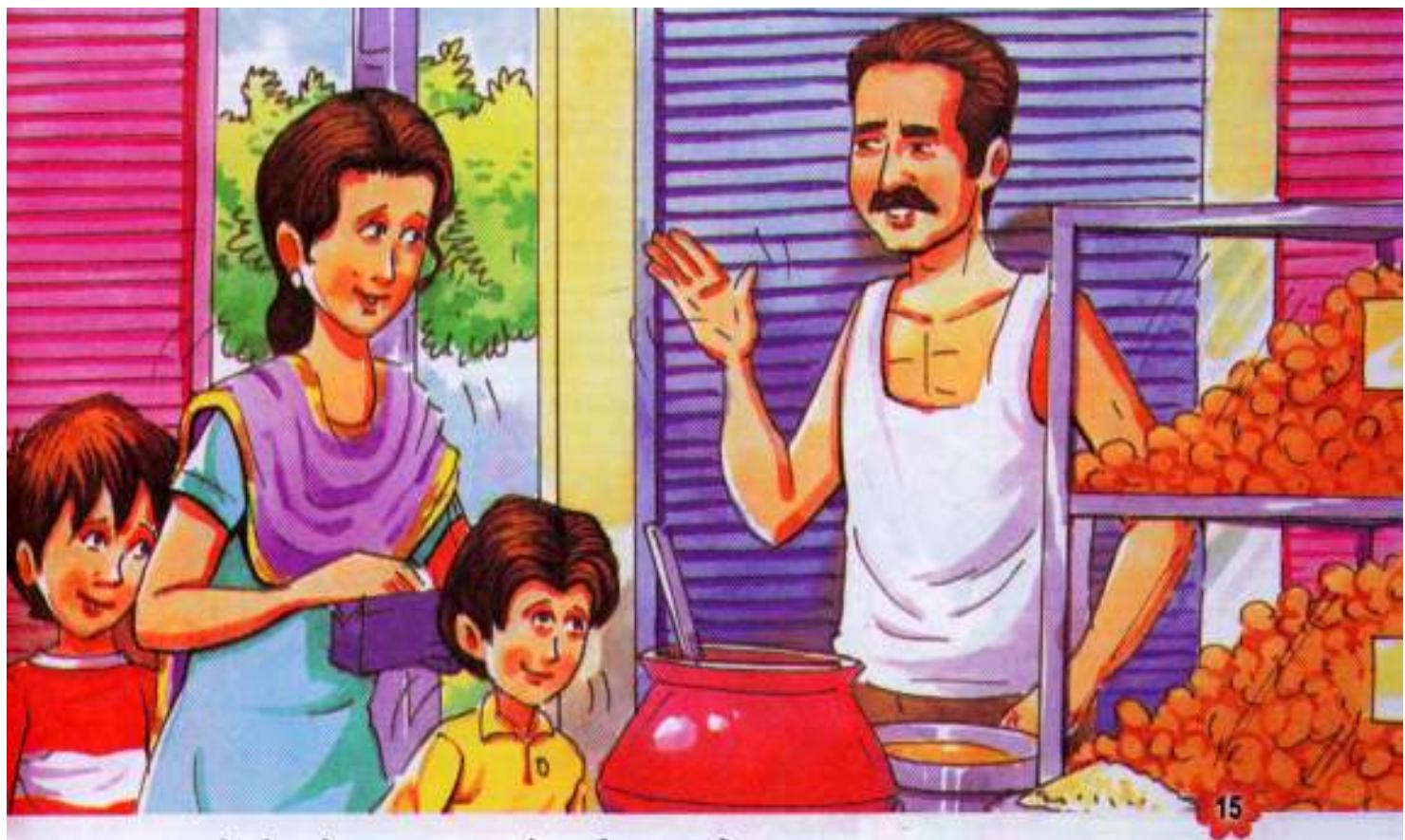
दोनों ने खूब सारे गोलगप्पे खाए।
जमाल को खूब मिर्च लग रही थी।
मदन को उससे भी ज़्यादा मिर्च लग रही थी।
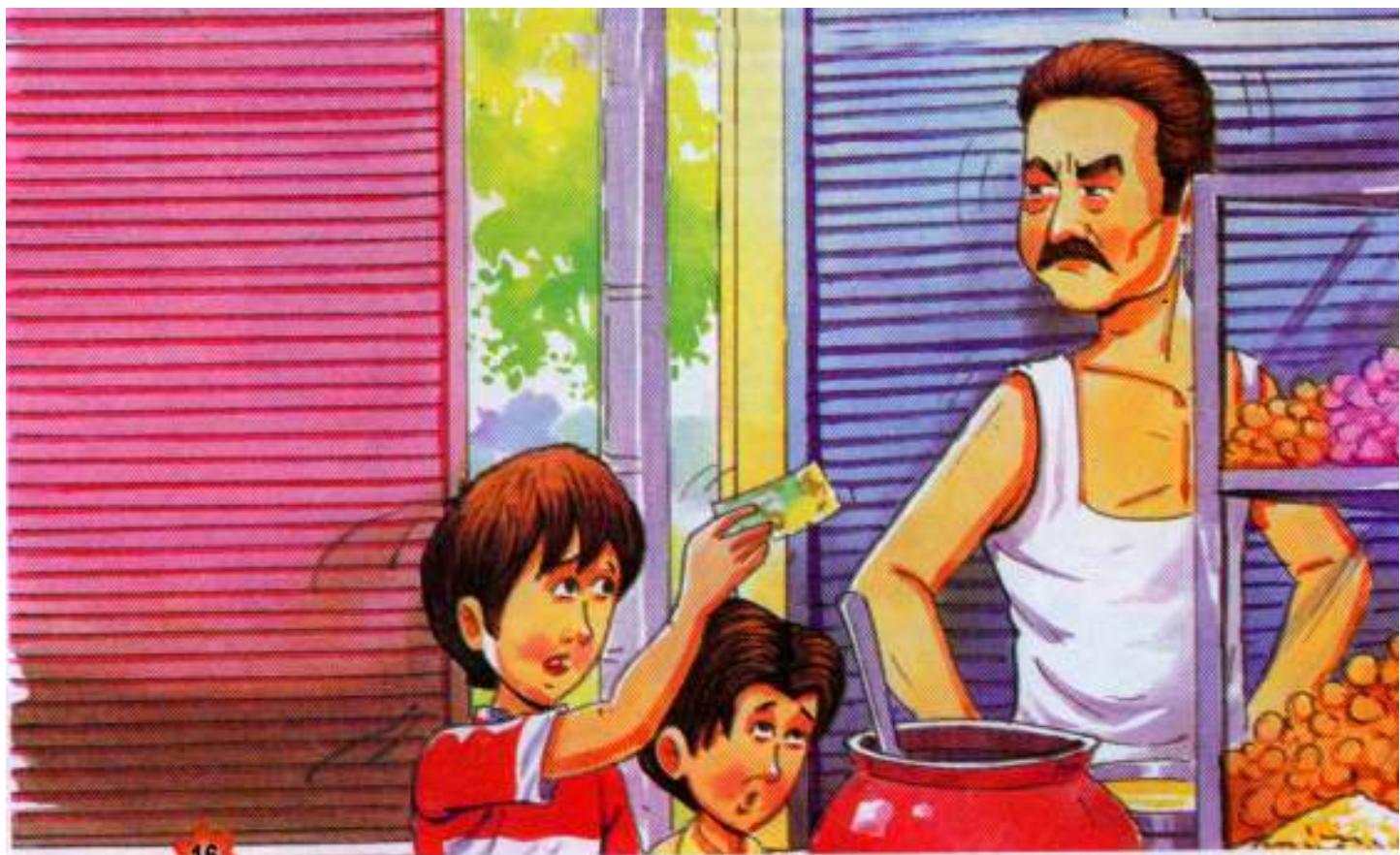
16

उन्होंने गोलगप्पे वाले को पाँच रुपये दिए।
दो रुपये कम पड़ गए।
गोलगप्पे वाले ने कहा – अगली बार दे देना।
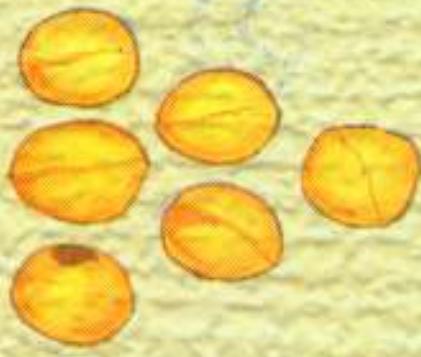
2086

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-887-4